टिप्पणी

7

भू-रणनीति

पिछले अध्यायों में आपने सैन्य अध्ययन के विकास और इसकी प्रासंगिकता के बारे में जाना। आपने भारतीय सेना के ढांचे और भूमिका को भी अवश्य समझ लिया होगा। वास्तव में शक्तिशाली सेना की आवश्यकता एक ऐतिहासिक तथ्य है। प्राचीन से मध्यकाल और आधुनिक काल तक साम्राज्यों के लिए शक्तिशाली सेनाएं रखना एक मजबूरी थी ताकि वे अन्य क्षेत्रों को कब्ज़े में लेकर अपने साम्राज्य के विस्तार के लक्ष्य को पूरा कर सकें।

आजकल इस लक्ष्य को विभिन्न रणनीतियों जैसे अपनी आर्थिक शक्ति और रक्षा को मजबूत करके प्राप्त किया जाता है। प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दूसरे देशों के साथ सन्धियां और समझौते करता है। प्रश्न यह उठता है कि यह तब और अब कैसे सम्भव होता? कौन से कारक सेनाओं को मजबूत बनाए रखने में सहायता करते हैं? राष्ट्रीय शक्ति और रणनीतियों के महत्व को जाने बिना इन प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए जा सकते हैं। भारत के प्राकृतिक संसाधन और आर्थिक सम्भावनाएं क्या हैं? और ये सेना को मजबूत करने में किस प्रकार सहायक हैं?

अब भू-रणनीति का अर्थ समझना और यह जानना आवश्यक है कि भारत के भू-राजनीतिक लक्ष्यों को किस प्रकार प्राप्त किया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद, आप :

- भू-रणनीति के अर्थ की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारत की सम्भावित राष्ट्रीय शक्ति को पहचान सकेंगे;
- देश की विभिन्न आर्थिक गतिविधियों का वर्णन कर सकेंगे।

7.1 भू-रणनीति क्या है?

जैसा कि आप देख सके हैं कि 'भू-रणनीति' दो शब्दों भूगोल और रणनीति के मेल से बना है। 'भूगोल' की विषय वस्तु भूमि का उसकी भौतिक विशेषताओं, जनसंख्या वितरण,भू-उपयोग

टिप्पणी

तथा देश के आर्थिक संसाधनों के आधार पर वर्णन करना है। दूसरी ओर रणनीति राज्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने की एक सोची-समझी योजना होती है।

भूगोल : पृथ्वी का इसकी भौतिक विशेषताओं, जनसंख्या वितरण, भू-उपयोग और संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर वर्णन।

रणनीति : राज्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने की सोची समझी योजना।

इसका अर्थ है कि भौगोलिक घटक रणनीति के अनिवार्य निर्धारक होते हैं। इस खण्ड में आप पढेंगे कि भूगोल और रणनीति के मेल ने किस प्रकार भारत की रक्षा रणनीति के विकास में अपनी भूमिका निभाई?

इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए यह समझना आवश्यक है कि 'रणनीति निर्धारण' के लिए कौन से कारक जिम्मेदार हैं परन्तु इससे पूर्व आपके लिए यह जानना जरूरी है कि भूगोल के कई उप-क्षेत्र हैं जैसे मानव भूगोल जो लोगों और उनके समुदायों से तथा आर्थिक भूगोल जो देश की आर्थिक एवं अन्य गतिविधियों के वितरण से सम्बन्धित होते हैं। हालांकि हम यहां भूगोल के रणनीतिक पक्ष के बारे में ही बात करेंगे, जिसको भू-रणनीति कहा जाता है।

भूगोल का उप-क्षेत्र राज्य के कल्याण एवं सुरक्षा को प्रभावित करने वाले भौगोलिक क्षेत्रों के नियन्त्रण और आकलन का अध्ययन है। रणनीति को प्रभावित करने वाले भूमि, जनसंख्या वितरण और प्राकृतिक संसाधन जैसे अनेक भौगोलिक घटक हैं। आईए, हम इन पर चर्चा करें।

7.1.1 भूमि

भूमि को भौतिक भूगोल अथवा प्राकृतिक भूगोल के रुप में परिभाषित किया जाता है। बड़े भू-क्षेत्र पर अधिकार होना किसी देश की शक्ति को निर्धारित करता है। प्रत्येक देश का भू-आकार और विस्तार अलग-अलग होता है। प्रत्येक देश के भू-लक्षण जैसे-पहाड़ियाँ, पर्वत, मैदान, मरुस्थल, नदियाँ और जंगल अलग होते हैं। जहाँ तक भारत का प्रश्न है, इसके प्राकृतिक भूगोल को कम से कम निम्नलिखित चार पक्षों में बांटा जाता है-

क) उत्तर में पर्वत; विशेष रूप से हिमालय क्षेत्र और कम पर्वतीय क्षेत्र-जैसे राजस्थान में अरावली, विन्ध्यांचल, पश्चिमी और पूर्वी घाट, नीलगिरी अथवा नीले पर्वत एवं अन्य।

ख) उत्तर भारत का मैदानी क्षेत्र जिसे भारत-गंगा का मैदान कहा जाता है।

ग) दक्षिण का पठारी क्षेत्र- भारत गंगा मैदान से लेकर पश्चिमी और पूर्वी घाट तक फैला हुआ। दक्कन का पठार भारत में सबसे बड़ा पठार है।

घ) भारत के द्वीप - भारत का पूरा तटीय क्षेत्र 7516 किलोमीटर तक फैला हुआ है। भारत के पश्चिमी भाग में गुजरात का तटीय क्षेत्र सबसे बड़ा है और दूसरे स्थान पर पूर्व में आन्ध्र प्रदेश की तटीय रेखा है। भारतीय सीमा क्षेत्र में 200 से अधिक द्वीप हैं जिनमें भारत के पूर्व में स्थित अंडमान और निकोबार तथा पश्चिम में स्थित लक्षद्वीप सम्मिलित हैं।

7.1.2 जनसांख्यिकी और संस्कृति

भारत विश्व में सघन आबादी वाले देशों में से एक है। 120 करोड की जनसंख्या के साथ यह विश्व का सबसे बड़ी जनसंख्या वाला दूसरा देश है। इसकी कुल जनसंख्या अमरीका और रूस की संयुक्त जनसंख्या से अधिक है और पूरे अफ्रीकी महाद्वीप से भी अधिक है। सैन्य परिप्रेक्ष्य में जनसंख्या के क्या लाभ हैं?

- पहला यह कि यह जनसंख्या भारतीय सेना के तीनों अंगों थल सेना, नौ सेना और वायु सेना के लिए आवश्यक मानव शक्ति प्रदान करती है। इस प्रकार की मानव शक्ति संकट काल में देश के लिए मजबूत रिज़र्व का काम करती है।
- दूसरा यह जनसंख्या देश की कृषि, विनिर्माण और औद्योगिक उत्पादन के लिए भी एक संसाधन होती है
- तीसरा भारत में युवा जनसंख्या का संकेन्द्रण है। भारत की लगभग 42% जनसंख्या 15 वर्ष से कम आयु की है और केवल 12% जनसंख्या 50 वर्ष या उससे अधिक आयु की है। यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि युवा जनसंख्या देश के कार्यबल को बढ़ाती है और देश के आर्थिक विकास में योगदान देती है।

भारत की विविधता का एक अन्य लाभ यह है कि विश्व में किसी अन्य देश के पास भाषा, बोली, धार्मिक और सामाजिक रीति रिवाजों में भारत जैसी विविधता नहीं है। भारत में हिन्दू, इस्लाम और ईसाइयत प्रमुख धर्म हैं। हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई जनसंख्या के साथ हमारे देश में सिक्ख, जैन और बौद्ध भी हैं। भारत बहुत सी बोलियों और भाषाओं का घर है। यहां लगभग 845 बोलियाँ बोली जाती हैं।

हालाँकि भारतीय संविधान द्वारा स्वीकृत 22 प्रमुख भाषाएं हैं। धर्म, रीति-रिवाजों, भाषाओं और जातियों में ये अन्तर लोगों का विभिन्न जातीय और वंश समूहों से सम्बन्ध रखने का परिणाम है। भूमि और जनसांख्यिक संसाधनों में विविधता को लोग अपने हित में प्रयोग करते हैं।

आइए, हम देखें कि हमारे देश के पास कौन से प्राकृतिक संसाधन हैं? अगले कुछ खण्ड इसको स्पष्ट करेंगे-

पाठगत प्रश्न 7.1

1. भू-रणनीति का क्या अर्थ है?
2. भूगोल के किन्हीं दो उप-क्षेत्रों के नाम लिखिए।
3. भारत के प्राकृतिक विभाजनों के नाम लिखिए।
4. भारत की तटीय रेखा की लम्बाई का माप लिखिए।
5. जनसांख्यिक संसाधनों के किन्हीं दो लाभों का वर्णन कीजिए।

टिप्पणी

7.2 ऊर्जा संसाधन और प्राकृतिक संसाधन अर्थ व्यवस्था में प्रमुख योगदान देते हैं

ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधन किसी देश की अर्थव्यवस्था के लिए अति महत्वपूर्ण हैं। भारत के पास ऊर्जा के अनेक संसाधन हैं जैसे : कोयला, पेट्रोलियम, हाइड्रो-इलेक्ट्रिसिटी और परमाणु ऊर्जा इत्यादि। भारत के पास हाइड्रो इलेक्ट्रिसिटी उत्पाद के लिए नदियों का विस्तृत जाल, प्राकृतिक वनस्पतियाँ, जंगल और अनेक प्रकार के खनिज संसाधनों का उपहार है जिसका देश की आर्थिक शक्ति में भरपूर योगदान है। प्राकृतिक संसाधनों के उपहार से सम्पन्न देश; एक शक्तिशाली देश होता है और रक्षा सेनाओं को मजबूत रख पाने में समर्थ होता है। आइए, हम भारत के प्रमुख ऊर्जा संसाधनों एवं सम्भावनाओं के बारे में जानें-

7.2.1 ऊर्जा संसाधन

देश के ऊर्जा संसाधनों को चार भागों में बाँटा जा सकता है- 1) कोयला 2) पेट्रोलियम 3) हाइड्रोइलेक्ट्रिसिटी 4) परमाणु शक्ति

1) कोयला अभी भी भारत में ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है। भारत, कोयला उत्पादन में विश्व में नौवें स्थान पर है। कोयले के प्रमुख भंडार बिहार, पश्चिमी बंगाल, मध्य प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश में हैं। क्या आप कोयले के उपभोग को जानते हैं? इसका विद्युत पैदा करने तथा स्टील और सीमेंट उद्योग में औद्योगिक उत्पादन के लिए प्रयोग किया जाता है।

2) पेट्रोलियम एक मूल्यवान ऊर्जा साधन है जिसमें कुछ भी बेकार नहीं जाता और इसके प्रत्येक उप-उत्पाद के अपने उपयोग हैं जैसे पेट्रोल, फ्यूल आयल, डीज़ल, स्नेहक (ल्युब्रिकेंट), ग्रीस इत्यादि। पेट्रोलियम के उप-उत्पादों के बिना सेना के तीनों अंगों की गतिशीलता रुक जाएगी और कोई आधुनिक युद्ध नहीं लड़ा जा सकेगा। वर्तमान में भारत 14.3 मिलियन टन तेल का उत्पादन करता है। भारत में इसके उत्पादन के मुख्य क्षेत्र हैं-आसाम में डिगबोई, सिबसागर, बापापुंग, हंसपुंग, नहरकटिया और मोरन; गुजरात में कैम्बे, अंकलेश्वर और कोबाल; पंजाब में आदमपुर और जन्नोरी, उत्तर प्रदेश में उझानी। इसके अतिरिक्त अपतटीय क्षेत्रों में तेल का उत्पादन बाम्बे हाई, अरब सागर के ढांचों और बंगाल की खाड़ी के उत्तर में होता है।

   तेल के नये स्त्रोतों की खोज कृष्णा, कावेरी और महानदी के डेल्टा क्षेत्रों में की जा रही है। तेल के मामले में हम दूसरों पर निर्भर करते हैं और अपनी ज़रुरत का लगभग 70% अमरीका, इरान और संयुक्त अरब अमीरात जैसे तेल उत्पादक देशों से आयात करते हैं। इससे हमारी अर्थ व्यवस्था प्रभावित होती है।

3) हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर - यह शक्ति निरन्तर उपलब्ध रहती है और इसका अन्त नहीं होता है। हाइड्रो इलेक्ट्रिक बांध और ऊर्जा संयत्र पर हवाई हमले हो सकते हैं जिनसे अचानक बाढ़ की समस्या पैदा हो सकती है। यदि हाइड्रो शक्ति आवश्यक है तो अपने

जल संसाधनों का संरक्षण और रक्षा भी आवश्यक है। रणनीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष है 'पर्यावरण की सुरक्षा'।

4) परमाणु शक्ति विश्व की विनाशक और निर्माणकारी शक्ति है जो अलग- थलग भागों में प्रगति और विनाश लाने में सक्षम है। भारत के पास नई सामग्री (यूरेनियम, थोरीयम, मोन्जाईट) के साथ परमाणु ऊर्जा पैदा करने की क्षमता है। परमाणु ऊर्जा संयंत्रों को तारापुर, राणा प्रताप सागर, कोटा और मद्रास में कल्पक्कम में लगाया गया है।

चित्र 7.1

चित्र 7.2

चित्र 7.3
स्रोत : Commons wikimedia.org

7.3.2 प्राकृतिक संसाधन

- **नदियाँ :** जैसा कि आप जानते हैं, जल जीवन का मुख्य स्त्रोत है और भारत को कई बारहमासी नदियों का वरदान प्राप्त है। भारत में तीन प्रमुख नदी तंत्र हैं। हिमालय की नदियाँ सबसे बड़े नदी तंत्र के रूप में जल का एक बड़ा संसाधन हैं। इनमें सिंधु नदी, गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियाँ शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक की लम्बाई 2000 किलोमीटर से अधिक है। इसके अतिरिक्त महानदी, गोदावरी, कृष्ण, कावेरी और नर्मदा जैसी प्रमुख नदियाँ भी हैं। आप देखेंगे कि नदी तंत्र देश के लिए विद्युत उत्पादन के अच्छे साधन हैं।

क्रियाकलाप 7.1

बारहमासी और मौसमी नदियों में अन्तर ज्ञात कीजिए। अपने राज्य की कम से कम दो बारहमासी और एक मौसमी नदी का नाम लिखिए।

टिप्पणी

- **प्राकृतिक वनस्पतियाँ :** किसी स्थान की वनस्पतियों की प्रकृति वहाँ के तापमान, वर्षण, मृदा और मनुष्य के व्यवहार पर निर्भर करती हैं। पूरे भारत में 900 मीटर से कम ऊंचाई के वर्षा क्षेत्र में वनस्पति उष्ण कटिबन्धीय मानसून प्रकार की होती है। विभिन्न क्षेत्रों में असमान वर्षा और स्थितियों कें कारण भारत में सूखे में पनपने वाली कंटक झाड़ियों से लेकर उष्ण कटिबन्धीय, सदाबहार पौधों की प्रजातियाँ होती हैं। ऊँचे हिमालय में अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ पैदा होती हैं, जिनका क्षेत्रीय वितरण उष्ण कटिबन्धीय से लेकर अल्पाइन प्रकार का होता है। भारत में जलवायु के आधार पर भी कई क्षेत्र हैं। इनमें तटीय मैदान, पश्चिमी घाट और उत्तर पूर्व भारत में उष्ण कटिबन्धीय वर्षा वन, उष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान, अर्द्ध शुष्क, उष्ण कटिबन्धीय मरुस्थल, सूखी सर्दी के साथ आर्द्र उप-उष्ण कटिबन्धीय जलवायु और हिमालय तथा काराकोरम श्रृंखला के 6000 मीटर से ऊंची पर्वतमाला में पर्वतीय जलवायु पाई जाती है।

- **जंगल (वन) :** देश के लिए महत्वपूर्ण संसाधन हैं और देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत के पास इस विविध दौलत का भरपूर खजाना है। ऐसा माना जाता है कि उष्ण कटिबन्धीय जलवायु में कुल क्षेत्र का एक तिहाई भाग वनों से घिरा होना चाहिए जिससे अनुकूल जलवायु की स्थिति बनी रहे। हमारे देश में वनों का वितरण असमान हैं। मुख्य रूप से ऐसा वर्षण में अनियमितता के कारण से है। भारत में वनों का क्षेत्र कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 19% है। भारत में वनों का वितरण निम्न प्रकार से है-

1) उष्ण कटिबन्धीय आर्द्र वन	-	23%
2) शुष्क पर्णपाती वन	-	29.15%
3) उष्ण कटिबन्धीय कंटीले वन	-	5.25%
4) उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन	-	4.5%
5) उप-उष्ण कटिबन्धीय (पुणे)	-	3.75%
6) आर्द्र तापमान (हिमालयी)	-	2.70%
7) आर्द्र शीतोष्ण कटिबन्धीय वन	-	1.6%
8) अन्य	-	29.75%

7.2.3 खनिज संसाधन

खनिज देश के औद्योगिक विकास का आधार होते हैं। सौभाग्य से भारत में कुछ आवश्यक खनिजों का जमाव है। भारत में कोयले, लोहे के अयस्क, माइका, मैंगनीज अयस्क, मैगनेसाईट, बाक्साईट और थोरियम के विशाल भंडार हैं। कोयला पश्चिम बंगाल, ओडिसा, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश और छतीसगढ़ में पाया जाता है। जबकि ये खनिज पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं और पूरे देश में वितरित हैं जबकि कुछ खनिज अपर्याप्त हैं।

पेट्रोलियम, फासफोरस, गन्धक और पोटाश देश की ज़रुरत से काफी कम हैं। इन खनिजों के लिए भारत को दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। भारत में आवश्यक खनिज संसाधनों का वितरण निम्न प्रकार से हैं-

1) लौह-अयस्क - बिहार, ओडिसा, आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, मैसूर और तमिलनाडु में पाया जाता है।

2) मैंगनीज़ - ओडिसा, कर्नाटक में पाया जाता है जिसे भारत मे धातुओं कें प्रगलन (गलाने) के लिए प्रयोग किया जाता है। रूस और घाना के बाद इसका सबसे अधिक उत्पादन भारत में होता है।

3) क्रोमाईट का प्रयोग रक्षा कार्यों में किया जाता है और मुख्य रूप से यह मैसूर और ओडिसा में पाया जाता है।

4) अभ्रक (माईका) मुख्य रूप से बिहार, राजस्थान और आन्ध्र प्रदेश में पाया जाता है। इसके उत्पादन में भारत विश्व में पहले स्थान पर है।

5) बाक्साईट अयस्क के निक्षेप (जमाव) बिहार, गुजरात, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु और ओडिसा में पाए जाते हैं।

6) जिप्सम को सीमेन्ट और उर्वरक उद्योगों में प्रयोग किया जाता है और यह मुख्य रूप से राजस्थान और तमिलनाडु में पाया जाता है।

7) युरेनियम संसाधन भी झारखंड राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक जैसे स्थानों पर पाया जाता है।

8) थोरियम का प्रयोग हथियारों के निर्माण में होता है और यह केरल में तटीय क्षेत्रों तथा राजस्थान में अरावली की पहाड़ियों की चट्टानों में पाया जाता है।

9) सोना - कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश में पाया जाने वाला एक अन्य मुख्य संसाधन है।

क्रियाकलाप 7.2

भारत का एक रेखा मानचित्र लीजिए। भाग 7.2.3 में दी गई जानकारी का प्रयोग करते हुए मानचित्र में उन राज्यों को चिन्हित कीजिए जहां उपरोक्त 1 से 9 क्रमांक तक दिए गए खनिज पाए जाते हैं। आप भिन्न प्रकार के रंगों अथवा चिह्नों का प्रयोग कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 7.2

1. भारत के प्रमुख ऊर्जा संसाधनों का वर्णन कीजिए।
2. हिमालय के तीन नदी तंत्रों के नाम लिखिए।
3. भारत के विभिन्न खनिज संसाधनों के नाम लिखिए।

टिप्पणी

7.3 भू-आर्थिक और आर्थिक शक्ति

किसी देश द्वारा अपने आर्थिक संसाधनों और परिसम्पतियों का प्रयोग करके आत्मनिर्भर बनाने की क्षमता को आर्थिक शक्ति कहते हैं। भू-आर्थिक व्यवस्था भूगोल और अर्थव्यवस्था का ऐसा मेल है जो किसी देश के अन्य देशों के साथ व्यापार करने के तरीकों को निर्धारित करती है। इसको विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से प्राप्त किया जा सकता है जिन्हें व्यापक रूप से तीन भागों में बांटा जा सकता है-कृषि, विनिर्माण और औद्योगिक विकास तथा सेवाएं। वास्तव में किसी देश के लिए आर्थिक विकास बहुत आवश्यक है क्योंकि किसी देश की युद्ध लड़ने की क्षमता उसकी आर्थिक शक्ति और प्रौद्योगिक श्रेष्ठता पर निर्भर करती है। आज का युद्ध प्राचीन युद्धों से बिल्कुल अलग प्रकार का है। आधुनिक युद्ध एक सकल युद्ध है, जिसमें प्राचीन धर्मयुद्ध के सभी मूल्यों को नकारा जाता है।

आधुनिक युद्धों में सफलता के लिए देश के सभी संसाधनों को झोंक दिया जाता है। उदाहरण के लिए पिछले दो विश्व युद्धों में मित्र देशों की जीत का मुख्य कारण संसाधनों में उनकी श्रेष्ठता थी, जिसने युद्ध लड़ने की क्षमता को निर्धारित किया और परिणाम स्वरूप विजय प्राप्त हुई। हमारे लिए इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि देश को शक्तिशाली बनाने के लिए संसाधनों का समुचित प्रयोग करना चाहिए। इस भाग में हम अध्ययन करेंगे कि देश के विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों की शक्ति का तीन प्रमुख आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से किस प्रकार प्रयोग किया जाता है।

7.3.1. कृषि

वह देश जो खाद्यान्नों एवं कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भर है उसे अन्य देशों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता क्योंकि वह अपने सहारे बना रह सकता है और पूरी जनसंख्या का भरण-पोषण कर सकता है। जहाँ तक भारत का सम्बन्ध है इसकी 70% जनसंख्या का प्रमुख व्यवसाय कृषि है और यह देश की रीढ़ है। बड़ी संख्या में लोग अपनी आजीविका कृषि के माध्यम से कमाते हैं। भारत में कृषि के अनेक तरीके हैं जो देश की पूरी जनसंख्या का पेट भरते हैं। गेहूं और चावल के मामले में भारत आत्म निर्भर है।

'गेहूं और चावल' के अतिरिक्त अन्य कई प्रकार के महत्वपूर्ण खाद्यान्न जैसे ज्वार, दालें और मक्का का उत्पादन भी किया जाता है। व्यवसायिक उद्देश्य के लिए अन्य फसलें भी पैदा की जाती है जैसे गन्ना, कपास, मुंगफली, तम्बाकू, चाय और पटसन इत्यादि। इन सबसे देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित होती है। इसका अभिप्राय है कि जब इन कृषि उत्पादों का निर्यात होता है तो देश में विदेशी मुद्रा आती है, जिसका प्रयोग देश की रक्षा क्षमताओं को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

7.3.2. औद्योगिक संसाधन

पिछले वर्षों में भारत ने औद्योगिक विकास में उल्लेखनीय प्रगति की है। अब देश में अनेक प्रकार का वस्तुओं को निर्माण किया जाता है। प्रत्येक प्रकार की वस्तुएँ निर्मित करने के लिए आधुनिक कारखाने लगाए गए हैं। धातु कर्म, बिजली, रसायनिक और दवाओं के उद्योगों में विदेशी सहयोग लिया गया है। इसने भारत में आधुनिक विनिर्माण उद्योग की नींव रखी है।

भारतीय उद्योग रेलवे, समुद्री जहाज, आटोमोबाइल्स, हवाई जहाज, औद्योगिक-मशीनरी, बिजली की मशीनरी और उपकरणों का विनिर्माण कर रहे हैं। रसायन और कागज उद्योग ने भी स्वतंत्रता के बाद काफी उन्नति की है। जहाँ तक सेना का सम्बन्ध है, भारत देसी तकनीक से मिसाइलें, टैंक, हेलीकोप्टर, समुद्री जहाज और रक्षा में प्रयोग होने वाले अन्य हथियार बना रहा है। मुख्य रूप से ये देश भर में स्थित अनेक उद्योगों द्वारा उत्पादित किए जा रहे हैं। भारत के कुछ अन्य प्रमुख उद्योगों में सूती वस्त्र उद्योग, चमड़ा उद्योग, लोहा और इस्पात उद्योग, हस्त दस्तकारी और इंजीनीरिंग उद्योग शामिल हैं।

7.3.3 सेवाएँ

सेवाओं को देश की आर्थिक गतिविधियों को सहायता देने वाली सेवा के रूप में समझा जा सकता है। इनमें पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य की देखभाल, संचार, यातायात, सूचना तकनीक, वित्त और प्रबन्धन जैसी सेवाएँ शामिल होती हैं। आज भारत में 'सेवा के क्षेत्र' की, आर्थिक गतिविधियों में प्रमुख हिस्सेदारी है।

विभिन्न प्रकार की इन गतिविधियों से आर्थिक प्रगति होती है, जिससे देश की आर्थिक और सैन्य शक्ति बढ़ती है जो देश के लिए रक्षा उपकरणों के विनिर्माण में वृद्धि करती है।

पाठगत प्रश्न 7.3

1. 'आर्थिक शक्ति' पद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. भारत में पैदा होनो वाली दो 'खाद्यान्न फसलों' तथा दो 'नकदी फसलों' के नाम लिखिए।
3. आर्थिक गतिविधियों को किस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।
4. औद्योगिक संसाधनों के कुछ उदाहरण लिखिए।
5. औद्योगिक संसाधन किस प्रकार से देश की रक्षा में सहायता करते हैं? स्पष्ट कीजिए।
6. भारत में औद्योगिक सेवाओं के कोई चार उदाहरण दीजिए।

आपने क्या सीखा

- भू-रणनीति के बारे में जानना भौगोलिक कारकों और रणनीति के बीच के सम्बन्धों को जानना है।
- भौगोलिक संसाधनों की सहायता से देश के उद्देश्यों और लक्ष्यों को पाने के लिए उपयुक्त रणनीतियाँ बनाई जाती हैं।
- भौगोलिक संसाधन देश की रणनीतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करते हैं।

- भारत में पर्याप्त और विविध संसाधन हैं। ये देश की आर्थिक प्रगति में सहायता करते हैं और देश की सैन्य शक्ति को व्यापक करते हैं।
- मजबूत रक्षा बलों को बनाए रखने के लिए मजबूत अर्थ व्यवस्था की ज़रूरत होती है। इसलिए भौगोलिक कारकों और रक्षा के बीच सम्बन्धों को जानना आवश्यक है।
- समझौते और सन्धियाँ भू-रणनीति के अन्य पक्ष हैं जिन्हें शान्ति, विकास और अच्छे सम्बन्धों के लिए देश आपस में करते हैं। इसका सबसे अच्छा उदाहरण सार्क और आसियान में भारत की भूमिका है।

अगले अध्याय में आप जानेंगे कि किस प्रकार भू-रणनीति निर्णय निर्माण में भी सहायता करती है।

पाठान्त प्रश्न

1. भूगोल का अध्ययन किस प्रकार रणनीति को समझने में सहायता करता है? स्पष्ट कीजिए।
2. भारत के विभिन्न प्राकृतिक संसाधन लिखिए।
3. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार भू-रणनीति देश की रक्षा में सहायता करती है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1 1. भू-रणनीति पृथ्वी के भौतिक लक्षणों और प्राकृतिक संसाधनों को सोची-समझी योजना के अनुरूप प्रयोग करके राज्य के राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने की नीति होती है।

2. मानव भूगोल और आर्थिक भूगोल

3. पर्वत, मैदान, पठारी क्षेत्र और दक्षिण के द्वीप

4. 7516 किलोमीटर

5. यह सेना के तीनों अंगों थल सेना, नौ सेना और वायु सेना को मानव शक्ति प्रदान करते हैं। यह आर्थिक गतिविधि का अच्छा स्त्रोत हैं।

7.2 1. कोयला, पेट्रोलियम, हाइड्रो-इलेक्ट्रिसिटी और परमाणु शक्ति

2. सिन्ध, गंगा और ब्रहमपुत्र

3. लौह अयस्क, क्रोमियम, बाक्साईट, कोयला, यूरेनियम, थोरियम, अभ्रक और जिप्सम

7.3 1. किसी देश की आर्थिक शक्ति, अपने आर्थिक संसाधनों और परिसम्पतियों का आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रयोग करना होता है।

टिप्पणी

2. खाद्यान्न फसलें - चावल, ज्वार, दालें और मक्का नकद फसलें - कपास, चाय, काफी, गन्ना, तम्बाकू
3. कृषि, औद्योगिक संसाधन और सेवाएं
4. रेलवे उपकरण, समुद्री जहाज निर्माण, आटोमोबाइल्स, एयर क्राफट, औद्योगिक मशीनरी, बिजली मशीनरी और उपकरण, रसायनिक और कागज उद्योग
5. यह रक्षा उपकरणों जैसे मिसाइलें, टैंक, जहाज, एयर क्राफट और रक्षा सम्बन्धी अन्य उपकरणों के विनिर्माण में सहायता करता है।
6. हाइड्रो इलेक्ट्रिसिटी, परमाणु शक्ति, कोयला, सूर्य की ऊर्जा
7. पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य सम्बन्धी देखभाल, संचार, यातायात, सूचना प्रौद्योगिकी, वित्त और प्रबन्धन।